सूरह — एक कहानी

सूरह अल-हज्ज

हज्ज

पूरा सफ़र — वो पुकार जो आज भी गूँजती है —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 22 • 78 आयतें • मिली-जुली

नूरानी इल्म
nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

या अय्युहन्-नासुत्-तक़ू रब्बकुम; इन्न ज़ल्ज़लतस्-सा'अति शै-उन 'अज़ीम
1. ऐ लोगो, अपने रब से डरो; बेशक क़ियामत का ज़लज़ला एक बहुत बड़ी चीज़ है।

व मिनन्-नासि मंय्यअ्बुदुल्-लाह 'अला हर्फ़
11. और लोगों में वो भी है जो अल्लाह की इबादत एक किनारे पर करता है।

व अज़्ज़िन फ़िन्-नासि बिल्-हज्जि यअ्तूक रिजालंव्-व 'अला कुल्लि ज़ामिर
27. और लोगों में हज्ज का एलान कर; वो तेरे पास पैदल और हर दुबली ऊँटनी पर आएँगे।

लंय्यनालल्-लाह लुहूमुहा व ला दिमाउहा व लाकिंय्यनालुहुत्-तक़्वा मिन्कुम
37. अल्लाह तक न उनका गोश्त पहुँचता है न ख़ून, बल्कि उस तक तुम्हारा तक़वा पहुँचता है।

फ़-इन्नहा ला तअ्मल्-अब्सारु व लाकिन तअ्मल्-कुलूबुल्-लती फ़िस्-सुदूर
46. क्योंकि आँखें अंधी नहीं होतीं, बल्कि वो दिल अंधे होते हैं जो सीनों में हैं।

या अय्युहल्-लज़ीन आमनुर्-क'ऊ वस्जुदू वअ्बुदू रब्बकुम
77. ऐ ईमान वालो, रुकू करो और सजदा करो और अपने रब की इबादत करो।

क़ियामत का ज़लज़ला

बेटा, ये सूरह तमाम इंसानियत को मुख़ातिब एक तंबीह से खुलती है, और ये क़ुरआन के सब से ख़ौफ़नाक आग़ाज़ों में से एक है:

'या अय्युहन्-नासुत्-तक़ू रब्बकुम — ऐ लोगो, अपने रब से डरो — इन्न ज़ल्ज़लतस्-सा'अति शै-उन 'अज़ीम — बेशक, क़ियामत का ज़लज़ला एक बहुत बड़ी चीज़ है।'

'यौम तरौनहा तज़्हलु कुल्लु मुर्ज़िअतिन 'अम्मा अर्ज़अत — जिस दिन तुम इसे देखोगे, हर दूध पिलाने वाली माँ उस बच्चे को भूल जाएगी जिसे वो दूध पिला रही है — व तज़'उ कुल्लु ज़ाति हम्लिन हम्लहा — और हर हामिला अपना बोझ **गिरा** देगी

— **व तरन्-नास सुकारा व मा हुम बि-सुकारा** — **और तुम लोगों को नशे में देखोगे, हालाँकि वो नशे में न होंगे** — **व लाकिन्न 'अज़ाबल्-लाहि शदीद** — मगर अल्लाह का अज़ाब सख़्त है।'

बेटा, तस्वीर का इंतेख़ाब महसूस कीजिए। तख़्लीक़ के तमाम रिश्तों में से, सब से मज़बूत एक दूध पिलाने वाली माँ और उसका नन्हा बच्चा है — एक ऐसी औरत जो उस बच्चे के लिए बिना खाना और बिना नींद के रह जाएगी। और अल्लाह कहते हैं: **वो अपनी छाती के बच्चे को भूल जाएगी।**

ये उस दिन की दहशत का पैमाना है। ये नहीं कि लोग डरेंगे — बल्कि ये कि **तख़्लीक़ का सब से गहरा जज़्बा मात खा जाएगा।**

और 'सुकारा व मा हुम बि-सुकारा' — वो बिना कुछ पिए नशे में लगेंगे: लड़खड़ाते, तवज्जोह न कर सकते, ज़ेहन कुछ थाम न सकता।

बेटा, ये आयत इस लिए है कि आपको उस चीज़ का वज़न महसूस कराए जो आ रहा है, ताकि बाक़ी सूरह — जो इबादत, क़ुरबानी और हज्ज के बारे में है — एक ऐसे शख़्स से हो जो दाँव को समझता है।

एक किनारे पर इबादत

और अब, बेटा, पूरे क़ुरआन में एक ख़ास क़िस्म के मोमिन का सब से बारीकी से देखा गया बयान:

'व मिनन्-नासि मंय्यअ्बुदुल्-लाह 'अला हर्फ़ — **और लोगों में वो भी है जो अल्लाह की इबादत एक किनारे पर करता है** — **फ़-इन असाबहू ख़ैरुनिअ्-तम-अन्न बिह** — **अगर उसे भलाई पहुँचे, वो उस से मुतमइन हो जाता है** — **व इन असाबत्हु फ़ित्नतुनिन्-क़लब 'अला वज्हिह** — **मगर अगर उसे कोई आज़माइश पहुँचे, वो अपने मुँह के बल पलट जाता है** — **ख़सिरद्-दुन्या वल्-आख़िरह** — **उसने दुनिया और आख़िरत दोनों खो दीं** — **ज़ालिक हुवल्-ख़ुस्रानुल्-मुबीन** — **यही खुला घाटा है।'**

बेटा, "अला हर्फ़" — एक **किनारे** पर, एक धार, किसी चीज़ के बिल्कुल सिरे पर। एक

आदमी का तसव्वुर कीजिए जो किसी चट्टान के किनारे या एक कैम्प के बाहरी सिरे पर खड़ा है: वो फ़न्नी तौर पर वहाँ है, मगर वो जमा नहीं हुआ। **एक धक्का और वो गया।**

ये एक ऐसा शख़्स है जिसका दीन मशरूत है। वो नमाज़ पढ़ता है जब कारोबार अच्छा है। वो शुक्र-गुज़ार है जब टेस्ट साफ़ आते हैं। वो अल्लाह की रहमत की बात करता है जब बच्चे सेहत-मंद हैं। और जब एक अस्ली वार पड़ता है — 'इन्क़लब 'अला वज्हिह', वो अपने **मुँह के बल** पलट जाता है, पूरी तरह उलट जाता है।

बेटा, ख़ुद से ईमानदारी से पूछिए: **क्या मेरी इबादत एक सरमाया-कारी है या एक रिश्ता?** एक सरमाया-कार तब निकाल लेता है जब मुनाफ़ा रुक जाए। एक बंदा इस लिए ठहरा रहता है कि वो किसकी ख़िदमत कर रहा है।

और फ़ैसला ग़ौर कीजिए: 'ख़सिरद्-दुन्या वल्-आख़िरह' — उसने **दोनों** खो दीं। क्योंकि उसने कभी दुनिया का पूरा लुत्फ़ न उठाया (वो हमेशा आधा-फ़िक्रमंद था), और उसने कभी आख़िरत न कमाई (उसने पहली मुश्किल पर इसे छोड़ दिया)।

बेटा, इलाज ये है कि **अभी** फ़ैसला कर लो — जब चीज़ें आसान हैं — कि तुम्हारी इबादत अच्छे नतायज की क़ीमत नहीं है। फिर जब वार आए, तो दोबारा सौदा करने को कुछ नहीं बचा।

हज्ज का एलान करो

और अब, बेटा, सूरह हमें बताती है कि हज्ज कहाँ से शुरू हुआ — और ये क़ुरआन के सब से दिल को छू लेने वाले हिस्सों में से एक है।

'**व इज़ बव्वअ्ना लि-इब्राहीम मकानल्-बैति** — और जब हमने इब्राहीम के लिए उस **घर की जगह** मुक़र्रर की — **अल्ला तुश्रिक बी शै-आ** — (ये कह कर): मेरे साथ किसी को शरीक मत कर — **व तह्हिर बैतिय लित्-ताइफ़ीन वल्-क़ाइमीन वर्-रुक्क'इस्-सुजूद** — और **मेरे घर को पाक कर** उन के लिए जो इसके गिर्द चक्कर लगाते, खड़े होते, रुकू और सजदा करते हैं।'

'**व अज़्ज़िन फ़िन्-नासि बिल्-हज्ज** — **और लोगों में हज्ज का एलान कर** —

यअ्तूक रिजालंव्-व 'अला कुल्लि ज़ामिरिंय्यअ्तीन मिन कुल्लि फ़ज्जिन 'अमीक़ — वो तेरे पास पैदल और हर दुबली ऊँटनी पर आएँगे; वो हर दूर के रास्ते से आएँगे।'

बेटा, इस मंज़र का तसव्वुर कीजिए। इब्राहीम (अलैहि0) एक ख़ाली वादी में खड़े हैं — कोई शहर नहीं, कोई लोग नहीं, कोई सड़कें नहीं, चट्टान और रेत के सिवा कुछ नहीं। और उन्हें कहा जाता है: **इंसानियत में हज्ज का एलान करो।**

रिवायात कहती हैं कि उन्होंने पूछा: मेरी आवाज़ उन तक कैसे पहुँचेगी? और उन्हें कहा गया: **तुमपर पुकार है, और हम पर पहुँचाना।**

बेटा, और यूँ उन्होंने पुकार लगाई। एक आदमी की आवाज़, एक ख़ाली सहरा में, चार हज़ार साल पहले।

और आज ज़मीन के इर्द-गिर्द देखिए। हर साल, हर मुल्क, हर ज़ुबान, हर रंग के लाखों लोग अपने घर छोड़ कर उस ऐन वादी तक सफ़र करते हैं। वो जहाज़ और बस से आते हैं, इंडोनेशिया और नाइजीरिया और ब्रिटेन और बांग्लादेश से — **और उन में से हर एक उस पुकार का जवाब दे रहा है।**

और वो जाते हुए क्या कहते हैं? '**लब्बैक अल्लाहुम्म लब्बैक**' — **हाज़िर हूँ, ऐ अल्लाह, हाज़िर हूँ।** बेटा, ये लफ़्ज़ी तौर पर एक **जवाब** है। ज़मीन का हर हाजी उस आदमी को जवाब दे रहा है जो एक ख़ाली वादी में चीख़ा था और जिसे कहा गया: तुम्हारा काम पुकार है, हमारा पहुँचाना।

बेटा, इसे अपना उसूल बना लीजिए। **पुकार लगाओ** — बच्चे को सिखाओ, भलाई बाँटो, सच कहो, काम शुरू करो। **पहुँचाना तुम्हारा शोबा नहीं।**

और ग़ौर कीजिए: 'रिजालंव्-व 'अला कुल्लि ज़ामिर' — **पैदल** और दुबली ऊँटनियों पर। जो पैदल आता है उसका ज़िक्र **पहले** है। बेटा, अल्लाह ने उस शख़्स की इज़्ज़त की जो मुश्किल से आया, उसे पहले नाम दे कर।

दिलों का तक़वा

फिर सूरह समझाती है कि ये अरकान अस्ल में किस लिए हैं, बेटा — और यहीं बहुत

से लोग इबादत को ग़लत समझते हैं।

'**ज़ालिक व मंय्यु'अज़्ज़िम शआ-इरल्-लाहि फ़-इन्नहा मिन तक़्वल्-क़ुलूब** — ये यूँ है। और **जो अल्लाह की निशानियों की ता'ज़ीम करे** — बेशक, **ये दिलों के तक़वा में से है।**'

बेटा, 'शआ-इरल्लाह' — अल्लाह की निशानियाँ और अरकान: का'बा, सफ़ा और मरवा, क़ुरबानी के जानवर, हुर्मत वाले महीने, नमाज़, क़ुरआन। और उनकी ता'ज़ीम एक ज़ाहिरी अमल नहीं बल्कि उस चीज़ का सबूत बयान की गई है जो **दिल में** है।

और फिर, बेटा, वो आयत आती है जो क़ुरबानी की पूरी मंतिक़ समझाती है — और इसे हर ईद-उल-अज़्हा पर पढ़ा जाना चाहिए:

'**लंय्यनालल्-लाह लुहूमुहा व ला दिमाउहा — अल्लाह तक न उनका गोश्त पहुँचता है, न उनका ख़ून — व लाकिंय्यनालुहुत्-तक़्वा मिन्कुम — बल्कि उस तक तुम्हारा तक़वा पहुँचता है।**'

बेटा, इसे जज़्ब कीजिए। अल्लाह साफ़ कह रहे हैं: मुझे गोश्त की ज़रूरत नहीं। मुझे ख़ून की ज़रूरत नहीं। **जानवर मेरे लिए तोहफ़ा नहीं — वो पहले से मेरा है।**

जो **चढ़ता** है वो तक़वा है: आमादगी, इताअत, एक क़ीमती चीज़ का सुपुर्द कर देना क्योंकि उसने माँगा।

बेटा, और ये उसूल **हर** इबादत पर हुक्मरानी करता है। जिस्मानी शक्ल एक बर्तन है; तक़वा मज़मून है। तुम्हारी नमाज़ की हरकतें उस तक नहीं पहुँचतीं — **तुम्हारा शु'ऊर पहुँचता है।** तुम्हारे सदक़े के रुपए उस तक नहीं पहुँचते — तुम्हारा इख़्लास पहुँचता है। तुम्हारे रोज़े की भूक उस तक नहीं पहुँचती — तुम्हारी इताअत पहुँचती है।

और इसी लिए दो लोग वही एक अमल कर सकते हैं और उन में से एक कुछ भी ऊपर नहीं भेज रहा। बेटा, हमेशा पूछो: **मैं अस्ल में क्या भेज रहा हूँ?**

और उसी हिस्से में रहमत ग़ौर कीजिए: '**फ़-कुलू मिन्हा व अत्'इमुल्-बा-इसल्-फ़क़ीर** — तो **उन में से खाओ** और परेशान-हाल और ग़रीब को **खिलाओ।**' क़ुरबानी

लोगों को खिलाती है। **इस्लाम में इबादत का तक़रीबन हमेशा कोई फ़ायदा-उठाने वाला होता है।**

आँखें अंधी नहीं होतीं

फिर सूरह मज़लूमों को अपना दिफ़ा' करने की इजाज़त देती है — '**उज़िन लिल्लज़ीन युक़ातलून बि-अन्नहुम ज़ुलिमू** — उन लोगों को **इजाज़त** दी जाती है जिनसे **लड़ाई** की जा रही है क्योंकि उन पर **ज़ुल्म** हुआ' — और बेटा, दी गई वजह ग़ौर कीजिए: उन्हें उनके घरों से सिर्फ़ इस लिए निकाला गया कि उन्होंने कहा 'हमारा रब अल्लाह है'।

और अल्लाह तारीख़ का एक उसूल समझाते हैं: '**व लौला दफ़'उल्-लाहिन्-नास ब'अ्ज़हुम बि-ब'अ्ज़िल्-लहुद्दिमत सवामि'उ व बिय'उंव्-व सलवातुंव्-व मसाजिदु युज़्करु फ़ीहस्मुल्-लाहि कसीरा** — और अगर अल्लाह लोगों को, कुछ को दूसरों के ज़रिए, न **रोकता**, तो ज़रूर **ढाए जाते ख़ानक़ाहें, गिरजे, इबादत-ख़ाने और मस्जिदें** जिसमें अल्लाह का नाम बहुत लिया जाता है।'

बेटा, ग़ौर कीजिए उस फ़ेहरिस्त में किस की हिफ़ाज़त होती है — सिर्फ़ मस्जिदें नहीं। दूसरी कम्युनिटियों की इबादत-गाहें भी नाम की गईं। और उसूल ग़ौर कीजिए: **बे-लगाम ताक़त तबाह करती है; अल्लाह ज़ुल्म को दूसरों को उसके ख़िलाफ़ उठा कर रोकते हैं।**

और '**व ल-यन्सुरन्नल्-लाहु मंय्यन्सुरुह** — और अल्लाह ज़रूर **उन की मदद** करेगा **जो उसकी मदद** करते हैं।' और वो कौन हैं? ठीक अगली आयत उनकी ता'रीफ़ करती है: '**अल्लज़ीन इम्-मक्कन्नाहुम फ़िल्-अर्ज़ि अक़ामुस्-सलात व आतवुज़्-ज़कात व अमरू बिल्-म'अ्रूफ़ि व नहौ 'अनिल्-मुन्कर — वो जो, अगर हम उन्हें ज़मीन में इख़्तियार दें, नमाज़ क़ायम करते, ज़कात देते, अच्छाई का हुक्म करते और बुराई से रोकते हैं।**'

बेटा, ये हर उस शख़्स का इम्तेहान है जो ताक़त पाता है: **उसे पा लेने के बाद उसने क्या किया?**

और फिर सूरह तबाह तहज़ीबों पर ग़ौर की दावत देती है — '**फ़-क-अय्यिम्-मिन क़र्यतिन अह्लक्नाहा व हिय ज़ालिमतुन फ़-हिय ख़ावियतुन 'अला 'उरूशिहा** — कितनी ही बस्तियाँ हमने तबाह कीं जब वो ज़ुल्म कर रही थीं, तो वो अब अपनी **छतों पर** गिर चुकी हैं' — बेटा, एक इमारत की तस्वीर जो अंदर को गिर गई, दीवारें छत के ऊपर।

और फिर वो आयत, बेटा, जो अस्ली मो'ज़ूरी का नाम लेती है: '**अ फ़-लम यसीरू फ़िल्-अर्ज़ि फ़-तकून लहुम क़ुलूबुंय्यअ्क़िलून बिहा औ आज़ानुंय्यस्म'ऊन बिहा** — क्या वो ज़मीन में सफ़र नहीं करते ताकि उनके **दिल समझें** और उनके **कान सुनें**? **फ़-इन्नहा ला तअ्मल्-अब्सारू व लाकिन तअ्मल्-क़ुलूबुल्-लती फ़िस्-सुदूर** — **क्योंकि आँखें अंधी नहीं होतीं, बल्कि वो दिल अंधे होते हैं जो सीनों में हैं।**'

बेटा, इसे याद कर लीजिए। एक आदमी की नज़र कामिल हो सकती और वो कुछ न देखे। वो दस तहज़ीबों के खंडहर देखे, उनकी तस्वीरें ले, और बे-बदले घर आ जाए। और एक अंधा आदमी एक आयत सुन कर रो पड़े।

समझने का आला, बेटा, दिल है। आँखें सिर्फ़ उसे मालूमात पहुँचाती हैं।

मक्खी

और अब, बेटा, एक मिसाल जो अल्लाह देते हैं जो अपनी तासीर में तक़रीबन शर्मिंदा कर देने वाली है:

'**या अय्युहन्-नासु ज़ुरिब मसलुन फ़स्तमि'ऊ लह — ऐ लोगो, एक मिसाल बयान की जाती है, तो इसे सुनो — इन्नल्-लज़ीन तद्'ऊन मिन दूनिल्-लाहि लंय्यख़्लुक़ू ज़ुबाबंव्-व लविज्-तम'ऊ लह — बेशक, जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो वो एक मक्खी तक नहीं बना सकते, चाहे वो इस के लिए जमा हो जाएँ — व इंय्यस्लुब्हुमुज़्-ज़ुबाबु शै-अल्-ला यस्तन्क़िज़ूहु मिन्ह — और अगर मक्खी उन से कुछ छीन ले, तो वो उसे उस से वापस न ले सकें — ज़'उफ़त्-तालिबु वल्-मत्लूब — कमज़ोर है ढूँढने वाला और जिसे ढूँढा गया।**'

बेटा, इस तौर को देखिए। एक हाथी नहीं, एक पहाड़ नहीं — एक **मक्खी**। दुनिया की

तमाम झूठी माबूद चीज़ें, मिला कर, एक मक्खी भी पैदा न कर सकें।

और फिर दूसरा वार, जो और भी ज़लील-कुन है: अगर एक मक्खी उन से कुछ झपट ले, तो वो उसे वापस न ले सकें। बेटा, मुअर्रिख़ बयान करते हैं कि मंदिरों में बुतों पर शहद और चढ़ावे मले जाते थे — और मक्खियाँ आ बैठतीं और खाना ले जातीं, और पत्थर के ख़ुदा कुछ न कर सकते।

'**मा क़दरुल्-लाह हक़्क़ क़द्रिह — उन्होंने अल्लाह की सही क़द्र न की — इन्नल्-लाह ल-क़विय्युन 'अज़ीज़** — बेशक, अल्लाह ताक़तवर, ग़ालिब है।'

बेटा, और पत्थर के बुतों से आगे का वसी' सबक़ लीजिए: **आप अल्लाह के सिवा जिस पर भी टिकते हो — एक शख़्स, एक ओहदा, एक रक़म — उसे इस कसौटी पर रखिए। क्या ये कुछ बना सकता है? क्या ये ख़ुद की भी हिफ़ाज़त कर सकता है?**

रुकू करो, सजदा करो, और कोशिश करो

और सूरह ख़त्म होती है, बेटा, एक आख़िरी हिदायत से — और ये क़ुरआन के सब से मुकम्मल हुक्मों में से एक है:

'**या अय्युहल्-लज़ीन आमनुर्-क'ऊ वस्जुदू — ऐ ईमान वालो, रुकू करो और सजदा करो — वअ्बुदू रब्बकुम — और अपने रब की इबादत करो — वफ़्'अलुल्-ख़ैर ल'अल्लकुम तुफ़्लिहून — और भलाई करो, ताकि तुम कामयाब हो।**'

बेटा, दो हिस्से ग़ौर कीजिए: अल्लाह के लिए इबादत, और 'इफ़्'अलुल-ख़ैर' — **भलाई करो**, आम तौर पर, हर चीज़ और हर एक के साथ। **नमाज़, और फिर फ़ायदा। ये दीन कभी एक को दूसरे के बग़ैर नहीं रहने देता।**

'**व जाहिदू फ़िल्लाहि हक़्क़ जिहादिह — और अल्लाह के लिए उस तरह कोशिश करो जैसा उसका हक़ है — हुवज्-तबाकुम — उसने तुम्हें चुना — व मा ज'अल 'अलैकुम फ़िद्-दीनि मिन हरज — और उसने दीन में तुम पर कोई तंगी नहीं रखी।**'

बेटा, इन दोनों को साथ थामिए: अस्ली कोशिश से जद्दो-जहद करो — **और** जानो कि अल्लाह ने इस दीन से मुश्किल हटा दी। कोई 'हरज' नहीं, कोई ना-मुमकिन

बोझ नहीं। जहाँ वाक़ई मुश्किल हो, ये दीन एक रुख़्सत देता है: बीमार बैठ कर पढ़ सकता, मुसाफ़िर क़स्र करता, जो रोज़ा न रख सके बाद में पूरा करता है।

तो अगर इस्लाम पर तुम्हारा अमल कुचलने वाला बन गया है, बेटा, देखो कि **कुचलने वाला पन दीन से आया या किसी चीज़ से जो तुमने उस में जोड़ ली।**

'मिल्लत अबीकुम इब्राहीम — तुम्हारे बाप इब्राहीम का दीन — हुव सम्माकुमुल्-मुस्लिमीन मिन क़ब्ल — उसी ने तुम्हें पहले मुसलमान नाम दिया।'

बेटा, हमारा नाम ख़ुद इब्राहीम (अलैहि0) ने दिया — 'मुस्लिमून', वो जो सुपुर्द होते हैं।

'फ़-अक़ीमुस्-सलात व आतुज़्-ज़कात वअ्तसिमू बिल्लाह — तो नमाज़ क़ायम करो, ज़कात दो, और अल्लाह को मज़बूती से थामो — हुव मौलाकुम — वही तुम्हारा मददगार है — फ़-नि'अ्मल्-मौला व नि'अ्मन्-नसीर — और वो क्या ही अच्छा मददगार है, और क्या ही अच्छा मदद करने वाला।'

बेटा, 'वअ्तसिमू बिल्लाह' — अल्लाह को **मज़बूती से थामो**। ये लफ़्ज़ किसी चीज़ को सख़्ती से पकड़ने के लिए इस्तेमाल होता है ताकि तुम बह न जाओ।

और सूरह के आख़िरी अल्फ़ाज़ एक ऐसा बयान हैं जिसे आपको हर ख़ौफ़ में अपनी ज़ुबान पर रखना चाहिए: 'नि'अ्मल-मौला व नि'अ्मन-नसीर' — क्या ही **अच्छा** मददगार, और क्या ही **अच्छा** मदद करने वाला।

बेटा, तो ये सूरह एक ऐसे दिन से शुरू हुई जब एक माँ अपने दूध-पीते बच्चे को भूल जाती है, और ये आपको ये बता कर ख़त्म होती है कि किसका हाथ थामना है। इन दोनों के दरमियान, इसने आपको सिखाया कि **एक किनारे पर इबादत मत करो, पुकार का जवाब यूँ दो जैसे हाजी देते हैं, और याद रखो कि सिर्फ़ तुम्हारा तक़वा कभी ऊपर चढ़ता है।**

इस सूरह से क्या सीखा

1. उस दिन की दहशत तख़्लीक़ के सब से मज़बूत रिश्ते के मात खाने से नापी जाती है।

2. 'एक किनारे पर' इबादत मत करो — वो ईमान जो अच्छे नतायज की क़ीमत हो दोनों जहान खो देता है।

3. इब्राहीम (अलैहि0) ने ख़ाली वादी में पुकारा और लाखों अभी भी जवाब देते हैं: पुकार लगाओ, और पहुँचाना अल्लाह पर छोड़ो।

4. अल्लाह ने पैदल आने वाले हाजी का नाम पहले लिया — इबादत में मुश्किल की इज़्ज़त होती है।

5. न गोश्त न ख़ून उस तक पहुँचता — सिर्फ़ तक़वा चढ़ता है। हमेशा पूछो तुम अस्ल में क्या भेज रहे हो।

6. आँखें अंधी नहीं होतीं बल्कि दिल होते हैं — समझने का आला दिल है।

7. अस्ली कोशिश से जद्दो-जहद करो, और जानो कि उसने इस दीन में कोई 'हरज' नहीं रखा — अगर तुम्हारा अमल तुम्हें कुचल रहा है, देखो तुमने क्या जोड़ा।

या अल्लाह, हमें एक किनारे पर इबादत करने से बचाइए, हमारा तक़वा क़ुबूल कीजिए, और हमारे मौला बनिए — नि'अ्मल-मौला व नि'अ्मन-नसीर। आमीन।